।। सेन को अंग ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ सेन को अंग लिखंते ||

|| कवत ||

तन बिन मन दे आग || ताय सूं लायन लागे ||
खिर खाँड मन खाय || जिभ्याँ बिन भूक न भागे ||
म्हेरी मन संजोग || स्वाद नही पुत्र न जाया ||
निस दिन मही बिलोय || मन सें घी नही आया ||
बिन बायां सुखराम कहे || क्रुषी निपावे कोय ||
तो मुक्ति बिन भजण रे || जढ सेन सूं होय ||१||

हाथ से अग्नी नही लगा रहा व मनसे ही समझ रहा की मै अग्नी लगा रहा हूँ यह समझ रहा तो क्या मनसे अग्नी लगानेसे अग्नी लगेगी ऐसेही रामनाम का स्मरण जीभ होठ से नही किया व मनसे समझ लिया की मै राम राम कर रहा हुँ तो क्या उससे मोक्ष मिलेगा इसप्रकार खीर खाई नही याने खीर का भोजन किया नही व मनसे सोच लिया की खीर का भोजन किया तो क्या उससे भुख जाएगी इसीप्रकार स्त्री के साथ संजोग किया नही व मनसे सोच लिया की मैने संजोग किया तो क्या मनके सोचने के संजोग से स्त्री सुख व पुत्र प्राप्त होगा? इसीप्रकार मनसे ही दही हर रोज बिलो लीया परन्तु हकीगत मे बिलोया नही तो क्या उससे घी प्राप्त होगा ? इसीप्रकार मनसे खेती बो डाली यह सोच लिया व खेतमे बिज डाला नही तो क्या उसे फसल प्राप्त होगी ? इसीप्रकार मनसे मेरी मुक्ति हो गयी ऐसा समज रहा व मुक्ति मिलने का राम भजन किया नही तो क्या उसे मुक्ति याने मोक्ष मिलेगा ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने तनसे भक्ति न करते मनसे मुक्ति मिलेगी यह समजते उन्हे समजाया ||| १ ||

मन सूं माँगे राछ || बोल बिन किणी न दीया ||
बिन माँग्या ऊपकार || मन मे सरणा लीया ||
पग बिन मन सुं चाल || जाय नग्र ले कोई ||
तो बिन सिंवरण सें मोख || सेन से भोळा होई ||
च्यार ग्यान ऊर ऊपजे || तब मन अंछया साच ||
ताँ पेली सुखराम के || मून गहयाँ नही पांच ||२||

किसी के भी घर जाकर उस मुख से अवजार माँगे नही व मन मे समज लिया की मैने अवजार माँग लिए तो क्या उसे वे अवजार मुखसे न माँगते मनसे माँगनेसे मिलेंगे?इसीप्रकार कोई बलवान के पास जाकर मुखसे शरणा नही माँगता व मनसे ही पकड लेता की मैने बलवान का शरणा ले लिया तो क्या वे बलवान उसके आपत्ती मे काम मे आएँगे?इसीप्रकार कोई पैरोसे शहर न जाते मनसे मै शहर पहुँच गया यह समजता तो क्या मनसे पकड लेनेवाला हकीगत मे शहर पहुँचेगा । इसीप्रकार रामनाम का

स्मरण किया नही व मनसे पकड लिया की मेरा स्मरण हो गया व मै मोक्ष मे पहुँचुंगा तो क्या वह मोक्ष मे पहुचेंगा?ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने मुखसे रामस्मरण न करते मनसे रामस्मरण कर लिया व अब मै मोक्ष मे पहुँचुंगा यह समजते उन सभी को जगत के अलग अलग दाखले देकर समजाया । किसी संत के हृदय मे मतज्ञान,श्रृतज्ञान,अवधीज्ञान व मनपर्चेज्ञान उत्पन्न हुए तब उसके तन मे मनपर्चा हुवा यह सत्य है । यह चार ज्ञान उपजे नही व कोई मौन धारण कर बैठ जाता की मुझे ये चार ज्ञान के साथ पाँचवा कैवल्य ज्ञान उपज गया यह समझ लिया तो यह झुठा है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।। २ ।।

मन भूपत सुण होय ।। राज जाँके जे आवे ।।
तो बिन सिंव्रण आ मोख ।। सेन सूं प्राणी जावे ।।
धन माया मन जोड ।। दाम ब्होरे जुग कोई ।।
तो बिन रटीयाँ राम ।। मोख सेनी से होई ।।
मन सूं घी जळ जाणीया ।। जो ईम्रत होय जाय ।।
तो दुनिया सुखराम के ।। मरे नलूखो खाय ।।३।।

जैसे मनसे राजा बन बैठा तो उसे राज सिंहासन मिलेगा क्या? जब उसे मनसे मान लेनेसे राज सिंहासन नही मिलेगा तो बिना रामस्मरण से प्राणी को मनसे रामस्मरण किया यह समज लेनेसे मोक्ष कहाँसे मिलेगा? मनसे अरबो खरबो का लेना देना किया तो क्या ऐसे करनेसे धन के लेने देने का बेपार होगा? इसप्रकार मनसे समज लेनेसे धनका लेना देना होता हो तो रामनाम मुखसे रटे बिना मन से रामनाम रट लिया यह समज लेनेसे मोक्ष होगा? आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले मनसे जल को घी जान लिया व वह जल घी हो गया तो जगत के लोग रुखा सुखा क्यों खायेंगे ? इसी प्रकार जल को कोई नर मनसे ही अमृत पकड लेता है व मै जल नही पी रहा अमृत पी रहा यह समज लेता है तो यह मनुष्य क्यों मरता है? इसीप्रकार मनसे रामनाम रट लिया यह समज लेनेसे मोक्ष मे नही जाता है ।।। ३ ।।

मून पकड रेहे बेस ।। राम मुख सूं नही ध्यावे ।।
तो घ्रणे की रीत ।। रिझ नही मोख न पावे ।।
पूँथा की सुण साख ।। कोई सिंव्रण तज दे हे ।।
सोनर गया बिगूच ।। नांव बिन पार न लेहे ।।
पांखा तो आई नही ।। पग सूं चाले नाय ।।
सो बूडो सुखराम के ।। घेर गंड कडा खाय ।।४।।

कोई प्राणी मोक्ष पाने के लिए मुख से रामनाम न रटते मौन पकड्कर बैठ जाता है इससे मोक्ष नही मिलता तो आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते है की यह तो धरणा देने

की रीत है । दसवेद्वार पहुँचे हुये संत की जिभ्या व मुख रामनाम रटन करने से बंद हो जाती है यह साखी सुनकर कोई नया नर मुखसे स्मरण करना तज देता है वह मनुष्य अपनी खराबी कर लेता है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले रामनाम रटने के सिवा किसीको भी नाम का पार नही मिलता ।।। ४ ।।

आप फिरे बाजार ।। भूप चढ गढ समावे ।।
वाँ सरभर सुण चाल ।। आप सेऱ्याँ मे लावे ।।
बुग ही हूवो नाँय ।। हाल हंसा की काढे ।।
गयो काग की भूल ।। जीव सिखरा तब बाडे ।।
मुख सिंवरण मत छाडजो ।। दसवे द्वार लग कोय ।।
होट कंठ सुखराम के ।। गढ चडीयां बंद होय ।।५।।

अब हम तो स्वयं बाजार मे फिर रहे है और राजा गढ के उपर चढकर स्थिर बैठा हुआ है । (अब शहर की गली–गली मे घूमनेवाला मनुष्य),राजा के जैसी चाल लाकर,(जैसे राजा बैठा रहता है ।) वैसे हम भी गली मे बैठे रहे,(तो जो संत है,वे गढ पर चढ गये,वे राजा के जैसा स्थिर बैठ सकते है । परन्तु जो गढ पर पहुँचे नही,वे गली मे घुमनेवाले गली मे ही बैठकर रहने से,गढ के उपर कैसे पहुँचेंगे ? इसी तरह संत तो ब्रम्हांड मे पहुँच गये है,उन्हे देखकर या उनकी बात सुनकर,जो पहूँचे हुए नही,वे पहुँचने के पहले ही स्मरण करना छोड देगा,तो स्मरण किए बिना कैसे पहुँचेगे),जैसे(कौआ)बगुला तो बना नही और हंस जैसी चाल चलता है,(तो वह मनुष्य) कौआ की भी चाल भूल जायेगा । और उसे(कौऍ को)शिखरा खा जाएगा । (इसी तरह मनुष्य साधु तो हुआ नही,परन्तु सन्तो की चाल चलने लगता है,तो वह अपनी भी अन्य मनुष्यताकी चाल भूल जायेगा । और उसे काल आकर खा जायेगा ।(तो कौआ(मनुष्य) और बगुला(साधू साधन करनेवाला),हंस(पहुँचे हुए संत)उस पहुँचे हुए संत की चाल,कोई साधन करनेवाला,उस पहुँचे हुए संत की चाल चलने लगेगा और साधन करना छोड देगा,तो वह बगुला(साधू)कौए की भी चाल भूल जायेगा । तब उसे शिखरा(काल)आकर खा जायेगा) ,तो कोई भी दशवेद्वार तक पहुँचे बिना,मुख से स्मरण करना(भजन करना),कोई भी मत छोडो । जब दशवेद्वार गढ पर चढ जाओगे,तब ओठ और कंठ अपने आप चलना बंद होगे ।(जैसे मनुष्य गाँव को पहुँचने पर पैरो से चलना बंद होता है,उसी तरह से संत गढ पर यानी ब्रम्हाण्ड मे चढ गये यानी ओठ और कंठ का चलना बंद हो जाता है ।) ।। ५ ।।

साखी ।।

जे चड बेठा गिगन में ।। लागी ब्रम्ह समाद ।।
या साखी सुखराम के ।। सुण मत किज्यो बाद ।।१।।

जो संत गगन मे ब्रम्हाण्ड मे चढकर बैठे है और उनकी ब्रम्ह समाधी लग गयी है,(वे मुख

से स्मरण नही करते है ।) ऐसी उनकी साक्ष सुनकर,(कोई मुख से राम नामका स्मरण मत करो, ऐसा) वाद करो मत । ।। १ ।।

जेसो तेरो देस हे ।। तेसी धारो साख ।।
ऊंची सुं सुखराम के ।। क्या लेसी सुण भाख ।।२।।

जैसा तेरा देश है,वैसे ही साक्ष धारण कर । तूं जहाँ तक पहुँचा है,वैसी ही तूं साक्ष दे । तू पहुँचा है,उसके आगे मत बता । तूं जिस देश मे पहुँचा नही,उस देश की बात बताकर,तूं क्या नफा लेगा ?(इसी तरह ब्रम्हाण्ड मे पहुँचे बिना,वहाँ की बात बतायी,तो तुम्हे क्या मिलेगा? तूं जहाँ तक पहुँचा है,वही की बात बता । तूं पहुँचा है,उससे ऊंचाई की बात मत बता ।)।२।

साख ऊंचले देस की, ।। सुण मत भूलो कोय ।।
सिंवरण कर सुखराम के ।। सेजाँ वा बिध होय ।।३।।

और दुसरे भी सभी लोगों ऊँचे देश की(जो ऊँचे देश मे पहुँचे हुए है,वे संत स्मरण नही करते है ।)साक्ष की स्मरण नही करते,ऐसा सुनकर कोई मन मे फुलो मत,(गर्व मत करो और स्मरण करना मत छोडो)और तुम सुमिरन करो,जिससे तुम्हारी भी सहजही वह विधी हो जायेगी । ।।३।।

।। इति सेन को अंग संपूरण ।।